सरगम और संदेश
फिल्मी गानों में जीवन दर्शन
डॉ. प्रकाश हिन्दुस्तानी

सरगम और संदेश

फिल्मी गानों में जीवन दर्शन

डॉ. प्रकाश हिन्दुस्तानी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: मई, 2025

© डॉ. प्रकाश हिन्दुस्तानी

प्राक्कथन

करीब तीस साल से हर हफ्ते फर्स्ट डे, फर्स्ट शो फिल्म देखता हूं। आदत हो गई है। अब भी बड़े परदे पर फिल्म देखे बिना चैन नहीं मिलता। सिनेमाघर के बड़े परदे का जादू मेरे लिए हमेशा बरकरार रहा। दशकों पहले जब सिनेमाघर में रिक्लाइनर नहीं होते थे और तरह-तरह की क्लास होती थी। बॉक्स, बालकनी, स्टॉल, फर्स्ट क्लास, सेकण्ड क्लास, थर्ड क्लास (जिसे बोलचाल में मूंगफली क्लास कहा जाता था), लेडीज़ क्लास आदि। जब छोटा था तब अपनी मां और बड़ी बहन के साथ मैंने लेडीज़ क्लास में भी फ़िल्में देखी हैं। लेडीज़ क्लास का टिकट सस्ता होता था और वह फर्स्ट क्लास के भी पीछे हुआ करता था। लेडीज़ क्लास में न तो सोफे होते थे, न ही सीटें ! थर्ड क्लास वालों की तरह वहां बेंचें भी नहीं होती थी। वहां दरी बिछी होती थी। सुविधाओं और सुरक्षा की अतिरिक्त व्यवस्था हुआ करती। पुरुषों का वहां आना मना होता था। सबसे ज्यादा शोर लेडीज़ होता था, क्योंकि कई महिलाएं गोदी में बच्चों को लेकर आ जाती थीं। बच्चे रोते तो शिशुओं की ब्रेस्ट फीडिंग भी वहीं हो जाती।

इंटरवल होता तो गेट पास लेकर हॉल के बाहर चले जाते। बाहर कचोरी-समोसे, कुल्फी, चना जोर गरम और सिंकी मूंगफली बिकती थी। कई लोग खाने का सामान लेकर आते। मूंगफली लेकर भी हॉल में आते, दाने खाकर छिलके हॉल में फेंक देते।

बाद में सफाई होती। हॉल में धूम्रपान सामान्य बात थी कई लोग सिनेमाघर में बीड़ी या सिगरेट पीने लगते। हॉल में धुंआ भर जाता। प्रोजेक्टर से आती छवियां धुंधली पड़ जाती। कई दर्शक हंगामा करते। सिनेमा के कर्मचारी आकर उन्हें समझाइश देते। कभी सख्ती भी करते। तब जाकर परदे पर फिल्म देख पाते। तब न तो VFX थे, न Dolby साउंड; न 3D-4D तकनीक थी, न Bigpix स्क्रीन, न ATMOS, न तमाम तामझाम! अब फ़िल्म बनाने और देखने-दिखाने का सलीका बदल गया है; पर लगता है फिल्मों की आत्मा कहीं भटक गई है! याद आता है वह दौर, जब हीरोइन का एक पॉज़ दिल को चीर कर रख देता था, एक्टर आंखों से वह कह देता था जो किसी भाषा का मोहताज नहीं! गानों की एक लाइन पूरी ज़िन्दगी का फ़लसफ़ा बयां कर देती थी! बरसों तक गाने की लाइन दिमाग़ और दिल में उतरी रहती थी।... और हां, अब तक उतरी हुई है!

फिल्मों के गाने सिर्फ कविता नहीं हैं। ये गाने सिर्फ गीतगार की भावनाएं नहीं हैं। ये गाने उसे परदे पर गानेवाले कलाकार की ही भावाभिव्यक्ति नहीं है। ये लाखों-करोड़ों फिल्म दर्शकों की भी अभिव्यक्ति हैं। इनमें छुपा है सरलतम शब्दों में गहनतम अर्थ। कई गाने तो इतने अद्भुत हैं कि वे एक ही लाइन में पूरी जिंदगी का दर्शन बता देते हैं। पूरे जीवन का सार। जिसे अभिव्यक्त करने के लिए पूरा जीवन, पूरी किताब चाहिए,

वह सम्पूर्ण दर्शन गाने की एक ही लाइन में समाहित हो जाये तो यह किसी चमत्कार से कम नहीं।

मैंने इन गानों की लाइनों में छुपे जीवन दर्शन से बहुत प्रेरणा ली है। यहां कुछ पसंदीदा गानों को समझने की कोशिश की है। उन गानों को पूरी तरह समझने के लिए पूरे गाने की पंक्तियां गीतकार और संगीतकार के नाम के साथ लिखी हैं। सनद रहे कि यहाँ मेरा मकसद गाने के बोलों की व्याख्या करना रहा है। किसी के भी कॉपीराइट अधिकारों का हनन करना नहीं है। वे सभी गीतकार मेरे लिए आदर्श और प्रेरणा के स्रोत हैं। उनके बोल उनकी के हैं। उन्हीं के रहेंगे। मैंने उन्हें समझने भर के लिए उद्धृत किया है।

आपको भी ऐसे कई गाने याद होंगे, जिनकी एक-एक लाइन पूरे पन्ने तो क्या, किताब पर भरी पड़ती होगी। कृपया मुझे लिखें कि आपका वह पसंदीदा गाना कौन सा है? इस संकलन पर आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

इस ईबुक के लिए मैं मित्र और लेखक-पत्रकार अजय ब्रह्मात्मज का आभारी हूँ, जिनकी प्रेरणा से ही यह प्रस्तुति संभव हो सकी है।

प्रकाश हिन्दुस्तानी

+91 98930 51400

prakashhindustani@gmail.com

अनुक्रम

जो भी है, बस यही एक पल है	7
मैं जिंदगी का साथ निभाता चला गया	11
वो यार है जो ख़ुशबू की तरह, जिसकी जुबां उर्दू की तरह	15
तेरी मिट्टी में मिल जावां , गुल बनकर के खिल जावां...	21
वहां कौन है तेरा मुसाफिर, जाएगा कहाँ	27
लागा चुनरी में दाग, छुपाऊँ कैसे	32
ज़िन्दगी कैसी है पहेली हाय	44
कारवाँ गुज़र गया गुबार देखते रहे!	51
आदमी मुसाफिर है आता है जाता है	58
सजन रे झूठ मत बोलो, खुदा के पास जाना है	65
अपना किनारा नदिया की धारा है !	72
ये मोह मोह के धागे, तेरी उँगलियों से जा उलझे	78
इक धुंध से आना है इक धुंध में जाना है	87
सावन जो अगन लगाये, उसे कौन बुझाये?	93
ये दुनिया अगर मिल भी जाये तो क्या है...	106

तुझ पे दिल क़ुरबान 117

“जिन्दगी के सफ़र में गुजर जाते हैं जो मकाम” 125

छाँव है कभी, कभी है धूप ज़िंदगी 144

ऐ मालिक तेरे बंदे हम 151

कभी किसी को मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता 158

छोटी सी ये दुनिया, पहचाने रास्ते हैं 165

संसार से भागे फिरते हो, भगवान को तुम क्या पाओगे 173

जो भी है, बस यही एक पल है

वक़्त फ़िल्म में साहिर लुधियानवी का लिखा गाना- "आगे भी जाने न तू, पीछे भी जाने न तू; जो भी है, बस यही एक पल है!"

हज़ारों दार्शनिक जीवन भर जिस खोज में लगे रहे, वह यही तो है- "जो भी है, बस यही एक पल है!" साहिर के इस गीत पर 100 ऑस्कर भी कम होंगे!

'वक्त' 58 साल पहले 1965 में रिलीज़ हुई थी, निर्देशक थे यश चोपड़ा! रवि का शानदार संगीत, आशा भोसले का खनकदार गायन, एरिका लाल पर फिल्माया पार्टी का गीत! सच कहूँ तो ये गाना फ़िल्म में नहीं था, बल्कि पूरी फिल्म ही इस गाने में थी! उससे बढ़कर बात यह कि यह गाना पूरी ज़िन्दगी का दर्शन है!

जीवन का फ़लसफ़ा !

आगे भी जाने न तू! पीछे भी जाने न तू !! जो भी है बस यही एक पल है!!!

भविष्य किसी को नहीं पता, अतीत हाथ से छूट गया है। अब वर्तमान ही है तुम्हारे पास! वर्तमान में भी यह साल, महीना, दिन, घंटा नहीं; बस यही एक पल! एक पल!!